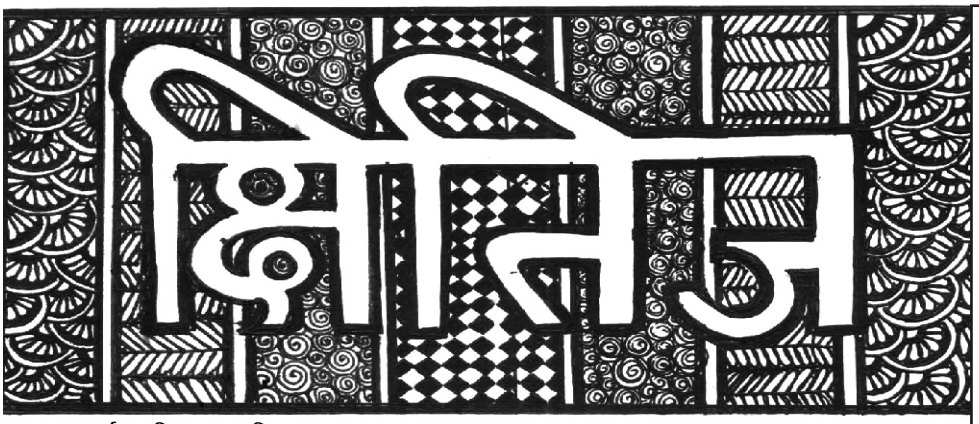

आर्त्त शान्तिः फला विद्या
वैल्हम गर्ल्स स्कूल, देहरादून

वर्ष 14, संख्या–1, अप्रैल–मई 2014

इस अंक में आगे है.....

- पृष्ठ 1 : सम्पादिका की कलम से
- पृष्ठ 2 : एक मुलाकात, अपना आकाश, बचपन
- पृष्ठ 3 : उलझन, विवशता, राहगीर
- पृष्ठ 4 : झंकार, ज़ायका
- पृष्ठ 5 : प्रजातंत्र अराजकता का पर्याय? तीसरी आँख
- पृष्ठ 6 : खूनी घाट, चुनाव से सम्बन्धित शब्दावली

सम्पादिका की कलम से

प्रिय पाठकगण,

हमारे विद्यालय में नया शिक्षा सत्र, बसंत ऋतु के आगमन के साथ ही पेड़ों की डालियों पर लगने वाले पलाश के फूलों के समान, जीवंत एवं उत्साहपूर्ण रुप में आरम्भ होता है। इस वर्ष सही मायने में तो इस सत्र का आरम्भ 3 अप्रैल, 2014 को हो जाना चाहिए था परन्तु कुछ अस्थायी व अनचाही परिस्थितियों के उत्पन्न होने के कारण यह देरी से ही शुरु हो पाया। आतंकवादियों द्वारा फैलाए गए खौफ के कारण हमारे विद्यालय की प्रधानाचार्या, उप प्रधानाचार्या व अध्यापक–अध्यापिकाओं को बहुत सारी परेशानियों का सामना करना पड़ा। जहाँ एक तरफ विद्यालय के प्रशासन को कई कष्ट झेलने पडे वहीं दूसरी ओर हम सब एक सप्ताह का लम्बा अवकाश पाकर फूले न समाए। आतंकवादी यह अंदाज़ा भी नहीं लगा सकते कि उनके 'दिल दहला' देने वाले खत ने कितनी लड़कियों के दिल जीत लिए!

''पथ की बाधाओं को जिनके पाँव चुनौती देते,
जिन्हें बाँध नहीं सकती लोहे की बेड़ी जंजीर,
मैं हूँ उनके साथ खड़ी जो सीधी रखते अपनी रीढ़।''

हरिवंशराय बच्चन जी ने कहा है कि सफलता सिर्फ उन्हें ही मिलती है जो निडर होते हैं, निर्भीक होते हैं। बस इसी विश्वास को मन में लिए हम सबने पूरे जोश के साथ, आगामी महीनों की गतिविधियों की तैयारियाँ शुरु कर दीं। फिर बात चाहे अंतर्सदनीय नृत्य प्रतियोगिता की हो या अंतर्विद्यालयीय वाद–विवाद प्रतियोगिता की, एक बार फिर विद्यालय का कोना–कोना हमारी तैयारियों की आवाजों से गूँज उठा। भले ही हम सब आतंक के खौफ को भूलकर अपने–अपने कामों में मस्त हो गए, विद्यालय द्वारा किए गए सुरक्षा के प्रबंध हमें बार–बार उस खौफ की याद दिलाते रहे। मानव जीवन संघर्षपूर्ण होता है। जीवन भर मनुष्य अपनी असली पहचान ढूँढने के लिए तथा अपने अस्तित्व की रक्षा करने के लिए संघर्ष करता रहता है। ऐसे में एक मानव ही मानव का दुश्मन कैसे बन जाता है–यह जानने के लिए मैं अत्यंत उत्सुक हूँ। आखिर एक व्यक्ति के मन में इतने अंगारे कैसे हो सकते हैं कि उनसे वह सारी मानव जाति को भस्म करना चाहता है। खास तौर से चुनाव के समय पर ऐसे लोगों (असामाजिक तत्वों) की तादाद खूब बढ़ जाती है। मेरा तो कहना यह है कि–

''हम पर हमला क्यों?क्यों हम पर यह अत्याचार,
कांग्रेस के हम हैं नहीं, नाही हमारी मोदी सरकार। ''

इन्हीं असामाजिक तत्वों के डर के कारण लगाए गए सुरक्षा बलों ने, हमारी हँसते–खेलते जीवन को नियमों की एक बेड़ी में बाँध दिया। परन्तु मैं जानती हूँ कि इन सुरक्षा दलों का प्रबंध हमारे हित के लिए ही किया गया है और इस इंतज़ाम के लिए हम अपने विद्यालय के प्रशासन, उत्तराखंड पुलिस विभाग एवं उत्तराखंड सरकार को धन्यवाद कहना चाहते हैं।

मैं आशा करती हूँ कि 'क्षितिज' का 2014 का यह पहला अंक आपको पसंद आएगा और आप सबका प्रेम इसे प्राप्त होगा।

धन्यवाद।

आर्तिका सिंह

एक मुलाकात

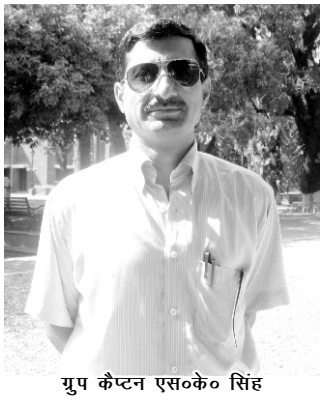
ग्रुप कैप्टन एस०के० सिंह

ग्रुप कैप्टन एस०के० सिंह के द्वारा हमारे विद्यालय में प्रबन्धक (प्रशासन एवम् वित्त) के महत्वपूर्ण पद पर एक वर्ष सफलतापूर्वक पूरा किए जाने पर 'क्षितिज' के सम्पादकीय दल ने उन्हें घेर लिया और उनसे इस एक वर्ष के खट्टे मीठे अनुभवों के विषय में प्रश्न पूछे जिनके उत्तर उन्होंने अत्यंत प्रसन्नतापूर्वक दिए। उन्हीं प्रश्नों के उत्तर पाठकों के लिए भी प्रस्तुत हैं–

क्षितिजः आपने हमारे विद्यालय में एक साल पूरा कर लिया है। यहाँ का वातावरण आपको कैसा लग रहा है?
ग्रुप कैप्टन एस०के० सिंह– मुझे बहुत अच्छा लग रहा है क्योंकि यहाँ का वातावरण मुझे परिवार जैसा लगता है। ऐसा ही वातावरण मुझे वायु सेना में भी मिला था।

क्षितिजः क्या आपको लगता है कि आपका यह साल सफलतापूर्वक बीता?
ग्रुप कैप्टन एस०के० सिंह– हाँ, मुझे ऐसा अनुभव होता है कि यह साल सफलतापूर्वक बीता परंतु मेरे मन में यही इच्छा है कि हम अपने विद्यालय को उन्नति के उच्चतम शिखर पर ले जाएँ।

क्षितिजःआपको हमारे विद्यालय का अनुशासन कैसा लगता है?
ग्रुप कैप्टन एस०के० सिंह– मुझे यहाँ का अनुशासन बहुत ही पसंद है। ऐसा नहीं है कि बच्चे शैतानी नहीं करते परंतु उनका स्वभाव बहुत निराला है। हर विद्यालय में बच्चे शैतानी करते हैं परंतु यहाँ के विद्यार्थी परिश्रमी हैं। बिना किसी के कहे ही ये बच्चे बास्केट बॉल कोर्ट साफ करने लग जाते हैं।

क्षितिजः अपने इस सफर में आपको कौन–कौन सी परेशानियों का सामना करना पड़ा?
ग्रुप कैप्टन एस०के० सिंह– मुझे इतनी मुश्किलों का सामना नहीं करना पड़ा क्योंकि यहाँ पर पूरी कार्यप्रणाली पहले से ही तैयार थी बस उसको निजी जिंदगी में अपनाने की ज़रुरत थी।

क्षितिजः आतंकवादियों द्वारा दी गई धमकी पर आपके क्या विचार हैं?
ग्रुप कैप्टन एस०के० सिंह– मुझे यह नहीं लगता कि हम पर आतंकवादयों द्वारा हमला होगा। परंतु हमें अपनी सुरक्षा को मज़बूत कर लेना चाहिए और सुरक्षा को मैं इसलिए आवश्यक समझता हूँ क्योंकि मैं वायु सेना का अधिकारी था। हमें सेना में यही सिखाया जाता है कि शत्रु को कभी कमज़ोर मत समझो।

क्षितिजः आप हमारे विद्यालय में भविष्य में कौन–कौन से परिवर्तन लाना चाहेंगे?
ग्रुप कैप्टन एस०के० सिंह– सबसे पहले मैं 'सबवे' के निर्माण की शुरुआत करना चाहता हूँ और हम 'स्वीमिंग पूल' का निर्माण कार्य भी जल्द ही आरम्भ करने वाले हैं। आप लोग शायद जानते ही होंगे कि 'स्पोर्ट्स काम्प्लैक्स' के लिए तैयारी भी आरम्भ हो चुकी हैं। मैंने हमारे विद्यालय की 'वैबसाइट' को बेहतर बनाने की योजनाएँ बनाई हैं।

क्षितिजः सभी छात्राएँ यह जानना चाहती हैं कि यह नया गेट सिस्टम कब तक चलेगा?
ग्रुप कैप्टन एस०के० सिंह – इस शिक्षा सत्र के अंत तक तो यह ऐसा ही रहेगा!
अंत में ग्रुप कैप्टन एस०के० सिंह सब वैल्हमाईट्स को संदेश देना चाहते हैं कि हमें हमेशा यह याद रखना चाहिए कि इस विद्यालय ने हमें क्या–क्या दिया है और समय आने पर हमें अपने विद्यालय से लिया हुआ उधार चुकाना चाहिए।

–ऐश्वर्या कुमार
प्री एस सी

विद्यालय की बास्केट बॉल टीम व बास्केट बॉल के प्रशिक्षक श्री विनोद बच्छानी को गोल्डन जुबली बास्केट बॉल टूर्नामेंट जीतने के लिए क्षितिज की ओर से ढेरों बधाइयाँ।

अपना आकाश

कर बुलंद अपनी आवाज़,
उठकर देख अपना आकाश
छूना है जिसको तूने आज ।
यही दिन हैं, मेहनत तू कर ले
कमर कस, आगे बढ़ ले ।
ले बड़े–बुजुर्गों का आशीर्वाद
कर बुलंद अपनी आवाज़,
सपनों की नगरी में बैठा
सच करना है इनको आज !
जगा अपना आत्मविश्वास
जिस डगर को जाना तुमने।
कर बुलंद अपनी आवाज़
उठकर देख अपना आकाश
रंग बिरंगा परिंदा बनकर,
उड़ जा तू खुश होकर आज
कर बुलंद अपनी आवाज़।

कामना बगई
ए 2सी

बचपन

हम है छोटे बच्चे,
दुखी होना जिन्हें आता नहीं।
समझ हम पाते नहीं,
पाप पुण्य के बीच का अंतर,
हमारी ज़िंदगी तो बस,
घूमती रहती खेल कूद में निरन्तर।
माता–पिता से डाँट है खाते,
फिर भी पढ़ाई कर नहीं पाते।
नहीं खाई जाती ये साग–सब्ज़ी,
हमें तो बस चिप्स हैं लुभाते।
गुरुओं से रोज़ डाँट हैं सुनते,
पर खुदको सुधार न पाते।
वादा करते, गलती नहीं करेंगे,
पर दूसरे दिन फिर वही दोहराते।
क्योंकि हम हैं बच्चे छोटे.....

– मान्या खेरिया
बी वन

उलझन

पिछले सप्ताह कक्षा में अकेले बैठे मैं सोच रही थी कि 'क्षितिज' के लिए किस प्रकार का लेख लिखूँ । पहले सोचा कि चुनाव के बारे में लिखूँ फिर सोचा एक रोमांच भरी कहानी लिखनी शुरु करूँ परन्तु कोई बात नहीं बनी। उसी क्षण मैंने एक ऐसे विषय पर लिखने का विचार किया जो मेरे दिलके बहुत करीब है– तब जाकर मन की खलबली शांत हुई।

इस लेख का विषय है– ' मनुष्यों का अपने विचारों पर नियन्त्रण 'आधुनिक दुनियां में सभी मनुष्यों ने अपने विचारों व कर्मों पर नियन्त्रण खो दिया है। मानो सब खुद से ही अपरिचित हैं। उदाहरण के तौर पर मैं आपको अपनी ही बात बताती हूँ। आज कल मेरे दिमाग पर सिर्फ कछ 'अलग ' कर दिखाने का भूत सवार है। चाहे व्यवसाय अच्छा हो या बुरा, अद्‌भुत होना चाहिए। चाहे विषय मझे पसन्द हो या ना हो, "युनीक" होना चाहिए। इसी कारण मैं सी.ए., डॉक्टर या इंजीनियर बनने का तो सोच भी नहीं सकती, क्योंकि भारत के अधिकतम युवक व युवतियाँ इन्हीं व्यवसायों को चुनना चाहते हैं! यह तो बात हुई पढ़ाई–लिखाई की, इसके अतिरिक्त मैं अपनी व्यक्तिगत भावनाओं पर भी निमन्त्रण खोती जा रही हूँ। कभी–कभी तो मैं स्वयं को ज़िम्मेदार और बड़ा महसूस करती हूँ और दूसरे ही पल मेरा मन एक सात वर्षीय बालिका के समान उछलने–कूदने का करता है।

इन सब समस्याओं को अलग हटाकर जब मैं कुछ नया करने का प्रयास करती हूँ तो एक और समस्या उत्पन्न हो जाती है–मैं जीवन में यदि किसी चीज़ का आविष्कार करना चाहती हूँ तो मालूम होता है कि इस गोल दुनिया के किसी कोने में कोई और वह आविष्कार पहले ही कर चुका है। अंत में बस यही लगता है कि इन परेशानियों का कोई समाधान नहीं है। समय के साथ जैसे –जैसे किशोरावस्था मेरे जीवन को छोड़कर जाएगी तभी मेरी समस्याओं का भी अंत हो जाएगा।

– वृंदा गुप्ता
प्री एस सी

विवशता

तारों भरे इस आकाश में,
ढूँढती हूँ मैं तुम्हें।
कहाँ गए तुम दादा जी?
आँखें तरस गई हैं तुम्हें देखने के लिए।
तुम्हारी उस बेंत की आवाज़,
अभी भी गूँजती है कानों में।
तुम्हारी लाई हुई मिठाइयाँ, खिलौने,
सब याद आते हैं मुझे।

★★★

राहगीर

क्या देखता है इधर-उधर
यह सफर तेरा है।
तू बस एक राहगीर है,
अपने पथ पर चलता जा।
पीछे मुड़कर न देख ,
वहाँ बस अँधेरा है।
कर रोशनी का पीछा,
दिल में उमंग की जोत जलाता जा।

– वर्णिता रस्तोगी
ए वन

बधाइयाँ

- **एस सी कक्षा की सभी छात्राओं को नए पदभार सँभालने के लिए ढेरों बधाइयाँ।**
- **अनाहिता साहु, गौरी गुप्ता, गिरीशा अरोरा, दिक्षिता गोयल व आफरा अंसारी को अपने–अपने सदनों के उप कप्तान बनने पर ढेरों बधाइयाँ।**
- **मृणालिनी सिंह वर्मा को विद्‌यालय के खेल विभाग की उपकप्तान बनने पर ढेरों बधाइयाँ।**

स्वागत

- **हम 'क्षितिज' की ओर से श्री गौरब मालाकार का वैल्हम परिवार में हार्दिक स्वागत करते हैं। श्री मालाकार हमारे विद्‌यालय में कला के प्रशिक्षक के पद पर आए हैं। इससे पूर्व वे युनिसन स्कूल में अध्यापन कार्य कर रहे थे। हमें आशा है कि वह हमारे विद्यालय के साथ लम्बे समय तक जुड़े रहेंगे।**

विदाई

- **विद्यालय की सेवा एक लम्बे अर्से तक करके सुश्री एल्विया सेन एवं सुश्री मीनाक्षी गिल्डियाल इस वर्ष सेवा निवृत्त हुई हैं। उनको विदाई देकर हम सबका मन बहुत दुखी हो रहा है। उन दोनों की कमी हमें हमेशा महसूस होगी लेकिन समय को रोकना किसी के वश की बात नहीं हैं। वह तो अपनी गति से चलता है और हमें अपनों से अलग कर देता है। हम आशा करते हैं कि सेवानिवृत्ति के पश्चात् उनका जीवन सुखद व मंगलमय होगा।**

- **क्षितिज की ओर से कला की प्रशिक्षिका श्रीमती निया अरोडा को भी हम विदाई देते हुए आशा करते हैं कि उनका भावी जीवन सुखद हो।**
- **बुलबुल सदन की प्रिय लक्ष्मी दीदी कई वर्षों तक छात्राओं की सेवा करने के पश्चात इस वर्ष सेवानिवृत्त हुई हैं। क्षितिज का सम्पादकीय दल उनके उज्ज्वल व मंगलमय भविष्य की कामना करता है।**

झंकार

अन्तर्सदनीय नृत्य एवम् संगीत की प्रतियागिताओं के महीने की प्रतीक्षा हर वैल्हमाइट करती है। कमाल की बात तो यह है कि नाचने और गाने वालों से ज़्यादा इस प्रतियोगिता में भाग न लेने वाली लड़कियाँ इस वक्त का इंतज़ार करती हैं। इसका कारण यह है कि ऐसे वक्त पर आधी लड़कियाँ नाच–नाचकर और गा–गाकर परेशान हो जाती हैं, और आधी लड़कियाँ इतना सोती हैं, इतना सोती हैं, कि कुम्भकर्ण को भी मात दे दें।

प्रतियोगिता के दिन जो दर्शक सभागार में उपस्थित होते हैं व इन प्रतियोगिताओं का आनन्द लेते हैं, उन्हें शायद इस बात की जानकारी तक नहीं होती कि इन शानदार प्रस्तुतियों की सफलता के पीछे कई हाथ एवं दिमाग होते हैं। प्रतियागी तो ज़मीन–आसमान एक करते ही हैं, संगीत और नृत्य की अध्यापिकाएँ भी इस समय पर मानो पागल सी हो जाती हैं। हॉकी की गेंद के समान वे एक सदन से दूसरे सदन तक जाकर प्रतियागियों की मदद करती हैं।

अन्तर्सदनीय नृत्य एवम् संगीत की प्रतियागिताओं के समय पाँचों सदन आपस में दुश्मन बन जाते हैं। जितनी मेहनत प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सदस्य करतें हैं, उतनी ही मेहनत भाग ना लेने वाले सदस्य भी करते हैं। वे अपने–अपने सदनों के प्रतिनिधियों का उत्साह बढ़ाने का कार्य करते हैं। हर सदन की गुप्त बैठकें होती हैं जिनमें गुप्त रुप से कुछ निर्णय लिए जाते हैं। इन्हीं बैठकों में लिए गए निर्णयों व योजनाओं की जानकारी दूसरे सदनों के गुप्तचर अपने सदनों तक पहुँचाने का कार्य करते हैं।

इस वर्ष तो हुप्पूज़ सदन ने लोकनृत्य व कथक का ऐसा धमाकेदार प्रदर्शन किया कि सभी ने दाँतों तले अंगुली दबा ली। सभी सदनों को पीछे छोड़कर उन्होंने प्रथम स्थान प्राप्त किया। कथक में द्वितीय स्थान ओरीयलज़ ने पाया और लोकनृत्य में फ्लाईकैचर्ज़ और वुडपैकर्ज़ ने दूसरा स्थान पाया। भरतनाट्यम में फ्लाईकैचर्ज ने दुर्गा कीर्तनम नृत्य को ऐसे सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया कि दर्शकों ने उनके नृत्य के दौरान पलकें तक नहीं झपकीं। उनसे एक कदम पीछे थे बुलबुलज़ और तृतीय स्थान प्राप्त किया वुडपैकर्ज़ ने। नृत्य प्रतियागिताओं के परिणामों की घोषणा को सुनने के पश्चात् स्थान को पूरा सभागार तालियों से गूंज उठा।

ऐसी होती है हमारी अन्तर्सदनीय नृत्य प्रतियोगिता। एक ओर उमंग, उत्साह, प्रतिस्पर्द्धा और मेहनत से भरी, और दूसरी ओर मस्ती और हंसी–मज़ाक से परिपूर्ण। जब कोई सदन इस प्रतियोगिता को जीत लेता है, तो उस जीत का स्वाद बहुत ही मीठा होता है। विजेता हाउस की खुशी का ठिकाना ही नहीं रहता।

लेकिन ये तो बस हम लड़कियाँ ही जानती हैं कि असल में खुशी शानदार जीत की होती है या जल्द ही मिलने वाली हाउस ट्रीट की!

– तारा कात्यायिनी सिंह
ए वन

ज़ायका

वैल्हमाईट्स अपनी अन्य योग्यताओं के अतिरिक्त अपने खाने के शौक के लिए प्रसिद्ध हैं। वैसे तो हम दिन भर व्यस्त रहते हैं परन्तु जब–जब' भोजन की घंटी की मधुर ध्वनि' हमारे कानों तक पहुँचती है तब–तब मानों हम स्फूर्ति एवं जोश से भर जाते हैं।

पिछले कुछ महीनों में हमारी भोजन की सूची में कई छोटे–छोटे परिवर्तन आए हैं। इन्हीं परिवर्तनों के कारण, वही लड़कियाँ जो पहले अपनी प्लेटों में 'खाना फैलाकर' डाईनिंग हॉल से भागने की राह देखती रहती थी, आजकल खूब देर तक बैठकर आलू के परांठों का मज़ा उठाती हैं। नौबत तो ऐसी आ गई है कि हमारा बस चले तो प्रार्थना किए बिना ही खाने पर टूट पड़ें और अध्यापिकाओं के विनती करने पर ही डाईनिंग हॉल से उठकर जाएँ।

सभी परिवर्तनों में से हमारा सबसे पसंदीदा परिवर्तन वह है जो हमारी पुरानी, टिकाऊ, ' बुलेट–प्रूफ' चपातियों में आया है आजकल हमें गोल–गोल, नर्म और बिल्कुल घर जैसी रोटियाँ मिलती हैं और यही नहीं, इनके साथ–साथ हम चावलों का मज़ा भी उठा सकते हैं । इसके अतिरिक्त हमारी भोजन सूची में छोले, कुल्चे, पूडियाँ व कई अन्य स्वादिष्ट मिठाइयों का प्रवेश भी हो चुका है।

किसी महान व्यक्ति ने सही ही कहा है कि एक व्यक्ति के दिल का रास्ता उसके पेट से हो कर ही जाता है। नए खाने ने तो वो कर दिखाया जिसे करने का प्रयास लड़के महीनों तक करते रहते हैं –सब लड़कियों का दिल जीत लिया। नए व्यंजनों ने तो बिना सोशल्स के ही इन सभी लड़कियों का दिल जीत लिया है। अच्छा खाना मिलने के कई फायदे भी हैं–आजकल प्रार्थना–सभा में बेहोश होने वाली लड़कियों की संख्या घट गई है। परन्तु इस लाड–प्यार के कारण एक परेशानी भी खड़ी हो गई है, जिसका नाम है–मोटापा। फिर भी मैं इस परिवर्तन का पूरा श्रेय अपनी प्रधानाचार्या– श्रीमती ज्योत्स्ना ब्रार, भोजनालय की संचालिका सुश्री अनु गुप्ता व ग्रुपकैप्टन एस.के.सिंह को देते हुए उन्हें पूरे विद्यालय के तरफ से धन्यवाद कहना चाहूँगी। बहुत ही खेद के साथ मुझे अब अपनी कलम नीचे रखनी होगी क्योंकि 'डिनर' की घंटी बज चुकी है और चूहों ने मेरे पेट में ताण्डव करना शुरु कर दिया है।

– अनाहिता साहू
प्री.एस.सी

प्रजातंत्र अराजकता का पर्याय? – एक बहस

हमारे विद्यालय में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी सुश्री लिनेल स्मृति अंतर्विद्यालयीय हिन्दी वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। इस वर्ष यह प्रतियोगिता 25 अप्रैल को आयोजित की गई थी। वाद–विवाद का विषय था –'भारत में प्रजातंत्र अराजकता का पर्याय है'। इस वर्ष ग्यारह विद्यालयों ने प्रतियोगिता में भाग लिया था और मंच पर 22 वक्ताओं ने विषय के पक्ष एवं विपक्ष में अपने विचार प्रस्तुत किए।

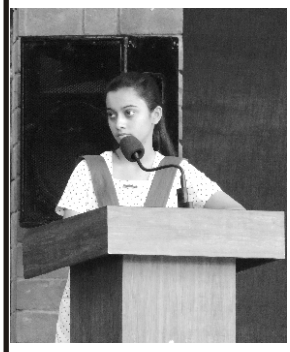

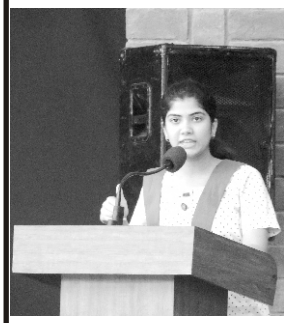

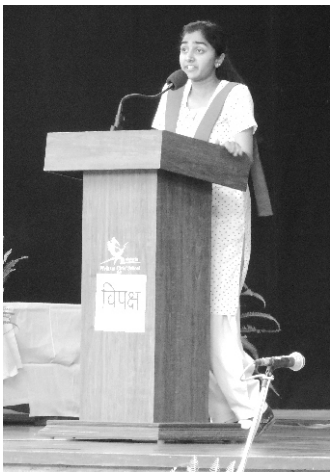

ग्यारह प्रतिवादकों ने सब वक्ताओं से उनके वक्तव्य पर आधारित प्रश्न पूछे। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी निर्णायकों, विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की इस प्रतियोगिता में खूब दिलचस्पी रही। प्रतियोगिता के परिणाम इस प्रकार रहे–

स्प्रिंगडेल्स स्कूल, पूसारोड, नई दिल्ली की मानसी ने विषय के पक्ष में प्रथम स्थान प्राप्त किया। राष्ट्रीय भारतीय सैन्य कॉलेज, देहरादून के केडेट अमन वशिष्ठ ने विषय के पक्ष में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। सेंट जोसफ एकैडमी, देहरादून की ऐश्वर्या सेठी ने विषय के पक्ष में तृतीय स्थान प्राप्त किया। वैल्हम गर्ल्स स्कूल की दीक्षिता गोयल ने विषय के विपक्ष में प्रथम स्थान प्राप्त किया। सेंट जोसफ एकैडमी, देहरादून की शुभांगी मित्तल ने विषय के विपक्ष में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। सिंधियास्कूल, ग्वालियर के कल्पितभगत ने विषय के पक्ष में तृतीय स्थान प्राप्त किया। वैल्हम गर्ल्स स्कूल की ध्रुवा शुक्ला ने प्रतिवादक के रुप में प्रथम स्थान प्राप्त किया। लामार्टिनियर फॉर गर्ल्स कॉलेज, लखनऊ की ताबिंदा जाफ़र ने प्रतियोगिता में प्रतिवादक के रुप में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। वैल्हम गर्ल्स स्कूल ने प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पाकर चलविजयोपहार प्राप्त किया। सेंट जोसफ एकैडमी ने द्वितीय स्थान पाया एवं लामार्टिनियर फॉर गर्ल्स कॉलेज, लखनऊ की छात्राएँ तृतीय स्थान की हकदार रहीं। मेज़बान विद्यालय ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, इसलिए चलविजयोपहार सेंट जोसफ एकैडमी को प्रदान किया गया।

तीसरी आँख

अकसर देखा जाता है कि बड़े–बड़े शहरों में अभिनेताओं ,अभिनेत्रियों ,नेताओं, अमीर व्यापारियों को हमेशा कड़ी सुरक्षा के घेरे में रखा जाता है परन्तु इस कलियुग के हाल तो देखिए अब तो विद्यार्थियों को भी सुरक्षा कवच प्रदान करने में कोई कसर नहीं छोड़ी जा रही है।

आजकल हमारे विद्यालय में छात्राओं के लिए दिन में कक्षाओं से छात्रावास तक जाना 'माउन्ट एवरेस्ट' पर चढ़ने के समान कठिन हो गया है और खुदा न करे कि गलती से हम कोई पुस्तक या ज़रूरी वस्तु छात्रावास में छोड़ आते हैं तो फिर पूरा दिन उस वस्तु के बिना बिताना ही निश्चित हो जाता है। सभी छात्राएँ सड़क पार करने के लिए अध्यापक–अध्यापिकाओं पर पूरी तरह से निर्भर हो चुकी हैं। छात्राएँ तो परेशान हैं ही, साथ ही अध्यापिकाएँ भी हमारी सेवा करके तंग आ चुकी हैं– कभी हॉकी के लिए सड़क पार करनी है तो कभी प्रेप के लिए, कभी चश्मा 'डार्म' में रह जाता है तो कभी पुस्तकें! और तो और इतनी कड़ी सुरक्षा के कारण विद्यालय में अवैध रूप से खाना लाना भी नामुमकिन हो गया है जिसके कारण हम डाइनिंग हॉल में अच्छी तरह खाने के लिए विवश हो गए हैं। खैर, यह सुरक्षा अब जैसी भी हो, हमारी दिनचर्या का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन गई है। चलो इसकी वजह से हम जिम्मेदार बनना तो सीखेंगे।

– वेन्या

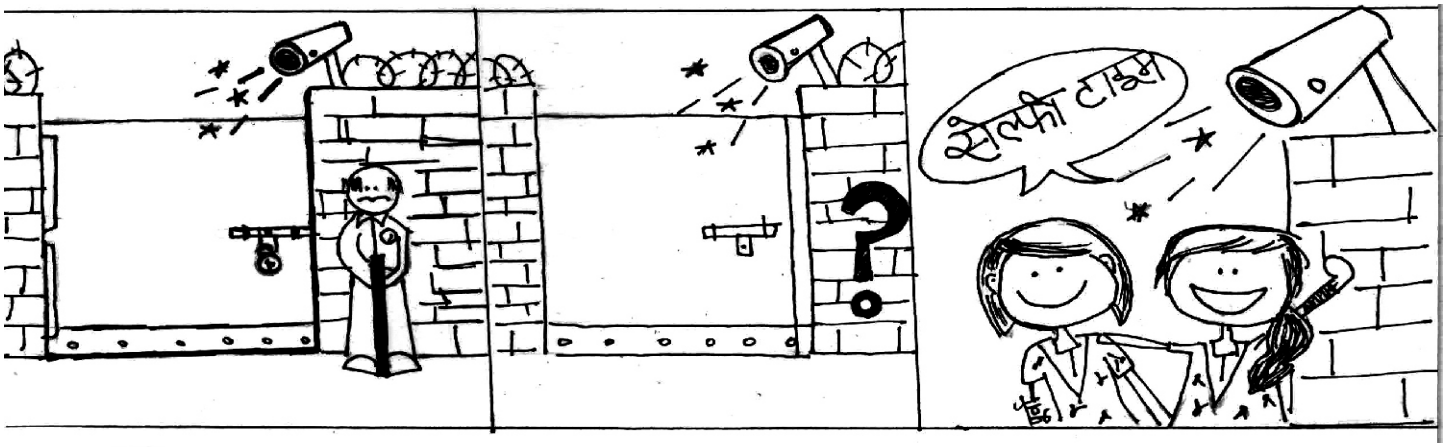

खूनी घाट

वार्षिक परीक्षाओं के आरम्भ होते ही सभी वैल्हमाइट्स उनके खत्म होने का इंतज़ार इसलिए करती हैं ताकि वे जल्दी से मिडटर्म की यात्राओं के लिए जा सकें। लडकियाँ मिडटर्म के लिए वार्षिक परीक्षाओं के पश्चात् व नए शिक्षा सत्र के शुरु होने से पहले जाती हैं। ऐसे में इस समय पर न तो इन्हें पढ़ाई की चिंता सताती है न खेलकूद की चिंता। हर वर्ष की तरह इस बार भी हम सब भारत के विभिन्न भागों को देखने गए। इस बार कुछ लोग जोधपुर गए तो कुछ शिमला। एस सी कक्षा की छात्राओं का एक दल हिमाचल प्रदेश से बहने वाली टौंस नदी के तट पर स्थित 'मोरी' नामक एक गाँव में गया था।

टौंस नदी को अपनी तेज़ धारा तथा इस पर अक्सर आने वाली बाढ़ों के कारण 'खूनी नदी' भी कहा जाता है। वैसे तो हम बीथ्री कक्षा से लेकर अब तक कई यात्राओं पर जा चुके हैं परन्तु यह यात्रा उन सबसे बहुत अलग थी। इस बार न तो हम 'होटल' में रुके,न हमने 'टी॰वी॰' देखने या बाहर के खाने का लुत्फ़ उठाया। पहले ही दिन हमने नदी के किनारे अपना शिविर लगाया। जंगल में मच्छर व कीड़े–मकौड़े तो बहुत थे परंतु तारों की छाँव में सोने का मज़ा भी कुछ और ही होता है। अगले दिन उठकर हमने आग जलाई और खाना पकाया। भले ही खाना 'स्वादिष्ट' नहीं था परन्तु अपना बनाया हुआ खाना किसे अच्छा नहीं लगता?अगले तीन दिनों तक हमने कड़ी धूप में चल कर कई पहाड़ पार किए। इतने दिन प्रकृति के सम्पर्क में रहकर मुझे एहसास हुआ कि हमारी अपनी सीमेन्ट ,पत्थर की दुनिया से अलग एक और दुनिया भी है , यह दुनिया प्रदूषण रहित है, पेड़–पौधों से भरी है और सुंदर है। मेरे ख्याल में हर मनुष्य को जीवन में अपने काम–काज से समय निकालकर प्रकृति के सुख को ज़रूर महसूस करना चाहिए।

– अनुश्री शर्मा
एस सी

मुख्य सम्पादिका – आर्तिका सिंह

सम्पादकीय दल – सृष्टि बंसल, रागिनी कयाल, कामना बगइ, तारा कात्यायिनी सिंह, ऐश्वर्या कुमार, अनुश्री शर्मा

चित्रकार – पूर्वा राधे गोयल, कनिष्का गुप्ता, शिवांगिनी बाठला

प्रभारी शिक्षिका – श्रीमती कुसुम डंडोना

चुनाव से सम्बन्धित शब्दावली

Election Commission - चुनाव आयोग
Ballot - मतपत्र
Poll - मतदान
Ballot system - गुप्त मतदान पद्धति
Candidate - उम्मीदवार, प्रत्याशी
Municipality - नगर पालिका
Ordinance - अध्यादेश
Ward - मुहल्ला
Allocate - आबंटित
Affidavit -शपथ पत्र
Ballot Configuration- मतदान विन्यास
Voter ID- मतदाता पहचान पत्र
Model Code of Conduct - आचार संहिता
Manifesto - घोषणा पत्र

– कामना बगइ
ए टू